जैल थै, वील पै

नवीन जोशी,
ब्यूरो प्रभारी, राष्ट्रीय सहारा, नैनीताल

.....पैल दृश्य.....

(नैन्ताल में लाकड़ौकि पाल वा्ल हॉस्टिलौक एक कम्र, तीन चारपाइ तीन कुंणन में– तीनों कै दगाड़ एक–एक कुर्सि मेज, किताबौंकि रैक बेतरतीब ढंगैल लागि रईं। द्वि चारपाइन में बिस्तर बेतरतीब फैलि रईं, तिसरि में यस लागणौ–क्वे सितिरौ। चौथ कुंण वाइ चारपाइ ठाड़ि छु। ठीक ठाक ढंगैल लागी मेज–कुर्सि में भैटी लौंड पंखि ओढ़ि बेर एक मशीना्क पुर्ज कें अलटि–पलटि बेर चांणौ और मेज में ला्गी ड्राफ्टरैल वीकि ड्राइंग बणूंणौ। कम्राक बीच में तीन लौंड भैटि बेर ताश खेलणईं और बिड़ि फुकणईं। सामंणि लुवाक डंड लागी एक मोरि छु, वीक माथि में लागी घड़ि राताक साढ़ि बार बजूंणै। कम्र में बिजुलिक एक बल्ब जगि रौ। मोरिक द्वार खोलि एक डंड निकालि बेर पंखि ओढ़ी एक लौंड भितर फटक मारि बेर ऊंणौ–सब वी उज्याणि चांणईं। पर्द उठूं)

ताश खेलणीं एक लौंड – *अरे हरिया! देखि आछै पिक्चर, को वा्इ दे्खी, 'ए' या 'यू' ?*
हरी – *अरे यार हम 'ए' क्लास वा्ल मैंस भयां, 'ए' क्लासै देखुंल। 'यू' क्लास देखंणी ना्न तिन जै कि भयां, ज्वान है गयां यारो ज्वान..... (लुवा्क डंड कै वापिस मोरि में फसूं, फिर जो चारपाइ में मैंस सिती जस लागणौछी, उ बिस्तर कैं समेटूं)*
दुसर – *यार त्वील हमूकैं बतायै नैं, नतर हमि लै ऊंना त्यार दगाड़, कसि छु पिक्चर ? चलो, भो सई। भोहुं देखि ऊंल हमि लै।*
तिसर – *यार हरिया, आज माल रोड में त्येरि भौतै नरै ला्गी यार। तु हुनै बातै और हुंनि, मा्ज ऐगो यार। आ भैट, धुं उड़ालै ? श्वेतांबरी पिलै कि पीतांबरी, या दिगंबरी चुसलै ?*
हरी – *दिगंबरी मैं अल्लै द्येखि बेर ऐ रयूं* **(हसूं)**, *श्वेतांबरी त्या्र पास ह्वेलि नैं। रोजै हारछै, डबल निमड़ि ग्या्य हुना्ल त्या्र। किलै खिचरोइ करछै, ला पितांबरी'ई प्यवा।*

(तिसर बिड़िक बंडल हरिया उज्याणि लफूं, हरी बिड़ि जगूं, एक फूक मारूं फिरि खांसू)

तिसर – *त्वील दिगंबरी द्येखि हुनैलि, हम लै लागि रौछियां आज एक पिंगई अंबरी काकड़ा फुल्यूड़ा्क पिछाड़ि.....*
पैल – **(रोकि बेर, गीत जस गांणौ)** *का... कड़ा फुल्यूड़ कसी....*
तिसर– *टक–टका–टक लागि रैछी कमला माल रोड में,* **(गीत गैंण लागू)** *टक–टका–टक कमला. ....*
हरी – **(आजि खांसणै में छु, पढ़णी लौंडा्क उज्यांण शान करि बेर)** *मणीं सजोलि बुला्ओ, कैं 'गुंणि' बुकाल....*
तिसर – *'गुणि' न कौ यार उथैं, रमेश न कै सकनै, एक रमेशै त छु जो पढ़ा्इ में हमा्र कौलेजैकि शान छु। बा्ब बका्र चरूंनी बल मैसूंक। बड़ि परेशानील इंजीनियरिंग करूणईं लौंड कैं, यां हौस्टिल में लै धरि राखौ। लौंड लै भल गुणी छु....*
हरी (रोकि बेर, दार्शनिक भावैल) – *तबै त कूणयूं यार उहूं 'गुणि', गुणी मैंस अच्यान गुणि'ई कईनीं। उसी लै य गणंणक जुग छु यारो, गुणनक न्हैं। गुण और गिन्ती में अच्यान गिन्ती'ई जितैं।*

(सब हंसनीं)

तिसर – *लौंड भय त यार रमेशै भै। यार, के लै कओ, द्यखो धै कतू मिहनत करणौ। कस लागिरौ पढ़ण में, हमा्र कल्याट है बेखबर है बेर। ऐल रात साढ़ि बार बाजी तलक तैकि ड्राइंग बड़णै। और एक हमि छां, तास खेलणयां और खिचरोइ में ला्गि रयां य फाइनल इन्त्यानौंक*

*बखत में। अल्लै पड़ि जूंल चारपाइन में, और रमेश रात्ती छींक नींन खुलैलि कै भिं में सितल.... **(आपंण ख्वर पकड़)** शरम ऊंण चें या हमूकैं।*
***पैल** – अरे शरम चनरैकि औलादा ! चुप कर यार, मूंड खराब नि कर। पत्त दिखा पत्त। जब हा्रलै तब आलि तुकैं शरम।*
***तिसर** – शरम त उ दिन आलि यार ज दिन रिजल्ट आल **(पत्त ख्यड़ू)** मकैं हारियै समझियै यार, मैं हिटूं आ्ब।*
(कम्र में बै भ्यार निकसि जां। और सब लै हुवां–हुवां कै उठनीं, आंखन में नीन द्यखींणै– पर्द गिरू)

.....दुसर दृश्य.....

(हास्टिलौक वी कम्र, सब बिस्तर बांधि बेर धरि रईं। आपंण–आपंण बक्सन में लौंड समान टांजणईं। तिसर लौंड कम्र में ऊं, कम्र में चार लौंड पैली बै छन, चारों दगाड़ हाथ मिलू)

***तिसर** – **(रमेश थें)** बधाइ हो यार, मकैं पैलियै बै पत्त छी तु पैल आलै कै, कतू ऐरै परसन्टेज ?*
***रमेश** – के खास न्हैं यार – पिछत्तर छु करीब, और त्येरि ?*
तिसर** – न पुछ यार, किलै शरमिंदा करूंछै। वी छन त्या्र पाटनरों कै जा्स हाल। गनीमत छु–पास है गोयूं। **(मणीं रुकि बेर)** यार म्या्र डिमाग में एक ख्याल ऐरौ बड़ जोरो्क **(और लौडौंक उज्यांणि चै बेर)** अरे हरिया, दिपुवा, ललुवा ! यथ आ्ओ यार, मैं एक बात कूंण चांणयूं सबूं थैं। **(सब वीक सामंणि ऐ जा्नीं)
***हरी** – कि खुराफात छु त्या्र डिमाग में सुरेशा ! भलि खुराफात उनीं त्या्र डिमाग में लै। पर एक खासियत छु तुमें, औरूं कें सीप सिखै दिंछै पर खुद आपंणि सीख में न चलनै।*
***पैल/दिपू** – **(हरी हुं)** मोरिक डंड निकालि बिस्तर में आपंण भैम बड़ै बेर पिक्चर द्यखंण हुं जा्ंण लै कि तुकै तैलै सिखाछी।*
***तिसर/सुरेश** – नैं नैं यार, तसि बात नि भै। ख्याल या आइडिया कूनीं जथें, बड़ि कमालैकि चीज हैं यार। और इनर अदल–बदल करते रूंण चैं। **(दिपू थें)** चल बता, तू और मैं आपंण एक–एक रुपैं आपस में बदलि ल्यूंल त हमा्र पास कतू रुपैं है जा्ल ?*
***दिपू** – एक–एकै रौल।*
***सुरेश** – पर जो हम आपंण एक–एक ख्याल बदलि ल्यूंल त...?*
***दिपू (सोचि बेर)** द्वि–द्वि ख्याल है जा्ज द्विनौंकै पास। यार सुरेशा, त्यर डिमाग लै यार! सांच्चि में शैतानक घर छु। पर तु आजक आपंण ख्याल त बता।*
सुरेश** – **(भावुक है बेर)** यारो द्यखो, हमा्र इन्त्यान पुरी ग्येईं। रिजल्ट लै ऐगो। भगवानै किपैंल पास लै है गयां, हमौर दगड़ इतुकै छी। है सकू हमूंकैं जीवन में मिलणौ मौक फिर कब्बै न मिलौ। पर हम एक मिलणक मौक बणै सकनूं यार। मैंल एक कागज बंणै रा्खौ, जमें ल्येखि राखौ कि हम आज बै ठीक बीस साल बाद आजाकै दिन यैं फिर मिलुंल। जो छु मंजूर त मिला्ओ हाथ **(हाथ अघिल करूं, और सब लै एक–एक कै एका्क मा्थि में एक हाथ धरनीं, फिरि कागज में दसखत कर दिनीं)
***सुरेश** – **(रमेश थैं)** और रमेश, बता यार कि सोचि राखौ त्वील अघिला्क तैं, कैं लगै रा्खछै नौकरीक जुगाड़ ?*
***रमेश** – यार हम जासूंक कि जुगाड़ ? पर भलि परसन्टेज छु म्या्र पास, कैं न कैं लागि'ई जूंल। एक कॉल लेटर लै ऐरौ नोएडा बटी एप्रेंटिसा्क तैं, द्यखनूं कि हुं।*
***दिपू** – यार मै त पीडबुलडी में लगूणयूं जुगाड़। वां भलि चलि रै बल यार, म्या्र का्क लै छन वां। खालि हांजरि लगूंण और तनखा लूंण हुं जांण पणूं बल औफिस।*

हरी – अरे इरीगेशन में त है लै भल छु बल यार। वां त फील्ड जौबा्क नौं पारि हांजरि लै आफ्फी लागि जैं बल, बस तनखा में बै परसन्टेज लिनीं बल।
सुरेश – **(हंसन–हंसनै)** ततू खुशि किलै हुंणैछै..? परसन्टेज आई कतू रै त्येरि, कां बै द्यलै ?
हरी – अरे यार, मैं इन्त्यान में आई परसन्टेजैकि बात न करनौय। उ परसन्टेज कें को पुछूं अच्यान। **(दार्शनिक भावैल)** जुगाड़ चैं जुगाड़, और जेब में चैनी हरीं–हरीं नोट, या्स **(जेब बै नोटोंकि गड्डी द्यखूं)**
सुरेश – ठीक कुंणैछै यार, हरीं–हरीं नोटै चैनीं, और उं त्या्र पास निमखंण भा्य, जुगाड़ाक तैं बा्ब इरीगेशन में ठेकदार भा्यै त्या्र। नौं 'हरी' **(जोर दिबेर)** भयै त्यर...**(हसूं, और सब लै हंसनीं) (अचानक रुकि बेर)** पर यार आम काबिल लोगनकें तनखा कै ला्ल भा्य। **(दार्शनिक भावैल)** एक जमा्न छि बल यार जब कामगारन कें तनखा मिलछीं बल। तब मैंस आपंण परिवारक तन भरि, ढकि लिछीं। फिरि 'बेतन' मिलंण लागौ। चलो कसीकै उधार लि दि बेर गाड़ि चलि जांछी। आ्ब त 'पे' मिलें। आज मिलें, भो बटी दुकानदारों कें 'पे' करंणि पड़ें बल।
ललू – यार मैं त काशिपुर जूंल, म्या्र मा्मज्यू घ्यूकि फैक्ट्री लगूणईं वां। मकैं लै जिड़ै'ई द्या्ल।
रमेश – और सुरेशदा, तुमि बताओ, तुमर कि छु पिलान ?
सुरेश – यारो ! हम त नेता प्रवृत्तिक भयां, कि धरि राखौ य नौकरीक चक्करन में। भीमताल में नई फैक्ट्री खुलणईं बल। वैं लगूंल तम्बू, जिन्दाबाद–मुर्दाबाद। बड़ि तागत छु यारो इनूमें। के नि करो, बस करो, ज्यूनौंकि मुर्दाबाद, मरीनैंकि जिन्दाबाद....।
ललू – तस करणैल कि ह्वल ?
सुरेश – ऐ जा तु लै म्या्र दगा़ड़, फिरि बतूंल। अरे पगला ! आंदोलन करूंल, बेरोजगारोंकि फौज कें आपंण दगा़ड़ करि ल्यूंल। बस द्वि–चार ना्रै त चैंनीं, त्वे जा्स मूरखनैकि कमी जै कि छु दुनी में, पिछाड़ि बै अणसोची हिटणियोंकि।
ललित – त कि तस करि बेर लै नौकरि मिलि जांछै ?
सुरेश (ललित हुं) – अरे घुरुवा, तु कटकी रौ मणीं ! जब–तब के न के पुछड़ैं में रूंछै **(रुकि बेर सवाल पुछूं)** अरे ककैं हैरै नौकरीकि ? **(जोर दिबेर)** नोट चैनीं नोट। फैक्ट्री वा्ल लि दि बेर तम्बू हटूंणैकि तैं बात न करला मिं हुं। बस नोट ल्हि बेर मैं चुप। द्वि–चार लौडौं कें लै लगै सकनूं मैं वां। रमेश, तु हिटछै कि ?
रमेश – न यार, म्या्र कई न है सकल तस। पैली मैं य इंटरभ्यू दि ल्यूं यार, फिरि ल्यूंल त्यर ट्यक। फिरि त्या्रै दगाड़ ऊंण छु।
(य बीच चार कुल्लि ऐ ग्येईं)
दिपू – यार रमेश, के गल्ति हैगे हुनली मांफि दियै यार, गाड़िक टैम हैगो, ऐल हिटनूं। **(कुल्लि वीक समान उठूं, रमेश दगै हाथ मिलै बेर भ्यार हुं निकलूं)**
हरी – हम लै हिटनूं यार, ललुवा हिट तु लै। अच्छया रमेश फिरि मिलुंल 'बीस साल बाद'। **(बड़ि ढबैल कू)**
(कुल्लि उना्र समान उठूनीं, तीना–तीन हात हलकूनैं हिटि दिनीं)
सुरेश – अच्छया यारो, याद धरिया बीस साल बाद मिलणौ्क करार **(भ्यार हुं हाथ हलकू) (रमेश थें)** अच्छया यार मिं लै हिटुंल आ्ब, तु लै किलै न हिटनै दगड़ै ?
रमेश – तु हिट यार, मिं जरा वार्डन स्यैपूं थें मिलि बेर ऊंल। उसी लै यार त्यर–म्यर दगड़ लंब जै कि भै। फिरि तु हिटलै लै लमा–लम कुल्लिक दगा़ड़। म्या्र पास समान लै ह्वल एक ब्वज।
सुरेश – मिलते रये यार कि चिट्ि्ठ दिये। म्यर पत्त भयै त्या्र पास। अच्छया हिटूं।
(हाथ मिलूं, फिर न्हें जां। रमेश जरा देर ठा़ड़ रूं, आपंण समान कैं चां, फिरि भितर हुं न्है जां। पर्द गिरू)

.....तिसर दृश्य.....

(होटलक कम्र, सामंणि दिवार में क्वे ठुल पेंटरैकि पेंटिंग ल्गि रै, जमें पांच घ्ड़ इथां–उथां हुं दौड़नई। सोफा स्यट में करीब चालीसैकि उम्राक चार मैंस भैटि सिगरेट फुकणई। द्वार में क्वे खट–खट करणौ)

एक (सफेद लुकुड़न में छु, नेता जस लागणौ) – को छै रे, ऐ जा **(मनै–मन)** सैद रमेश ऐगो।

(ख्वा्र में सा्ंफ बादी होटलौक कर्मचारि भितर हुं उं)

कर्मचारि – सर, कोई मिस्टर रमेश हैं।

दुसर (कमीज पैंट में छु) – हां, हां, उन्हें बुलाओ।

(कर्मचारि भ्यार जां, मणीं देर में वीक दगा़ड़ एक कोट पैंट पैरी मैंस भितर ऐ जां)

मैंस – दगड़ियो नमस्कार, मैं रमेश। **(नेताक उज्यांणि शान करि बेर)** नेताज्यू तुम त सुरेशै ह्वाला, पर....। **(दुसरा्क उज्यांणि शान करि बेर)** तुम ललित....**(तिसा्र हुं)** तुम दीपक....और तुम.. ...**(चौथ हुं)** हरित। **(मणीं रुकि बेर)** ठीक पछ्याणछा मैंल कि गल्ति हैगे के ?

सुरेश – यार! त्यर लै जवाब न्हैं यार। त्वील सबूकें ठीक पछ्याणौ पर हम सब एक दुसा्र कें पछ्याणंण में मणीं गल्ति करि'ई गयां। **(कर्मचारि थें)** चाय और बिस्किट। **(कर्मचारि मणीं ख्वर टोर करि न्है जां)**

सुरेश – हो्इ यार रमेशा ! त्या्र ऊंण है पैली हमूंह आपंणि राम का्थ लगै रा्खछी। य दीपक पीडबुलडी में लागछी। पनर साल ठीक–ठाक नौकरी करी। एक घप्ला्क चक्कर में अच्यान सस्पेंड छु। य ललित आपंण मामै्कि घ्यूकि फैक्ट्री में लागौ। पैली फैक्ट्री ठीक–ठाक चलछी, पर य ग्लोबलाइजेशन, ग्लोबल मंदीक दौर में विदेशि रिफाइंड फैक्ट्रिना्क मुका्बल में देशि घ्यूकि फैक्ट्री कां टिकि सकनीं। फैक्ट्रीक दगा़ड़ यैकि हालत लै खराबै छु अच्यान। बखतै खराब छु यार कि कईं।

रमेश – और हरिताक कि हाल छन इरीगेशन में ?

दीपक – हाल कि छन, बिहालै छन हमरी चारि। उ कि कूनी ढुंग में ध्वे हाड़ में सुखै वा्ई बात हैरै। इरीगेशन में एप्रेंटिस करि बेर त एक ठुलि नामी फैक्ट्री में ला्गौ। को्प कुंणौछी, सरकारि टैक्स और सब्सिडीक टैम पुरी गो बल वां। आ्ब उ ढब–बिढबैल कर्मचारिनैकि छुट्टि करि भाजणै्कि फिराक में छु बल। इला्क में उ टैम ला्गी और फैक्ट्रि लै सब्बै अधबीचाक जंगार साबित भई। आ्ब यैक तैं लै घर जूंलौ बा्ब रिसाल, बंण जूंलौ इज रिसालि वालि हालत है रै।

रमेश – और तुमर कस चलि रौ सुरेश दा, तुमरि नेतागिरी में न त सस्पेंड हुंणक खतर भै न धंध मंद या बंद हुंणाकै क्वे चांस भा्य। क्या्प कूनीं उ–तुमा्र त पाचूं आंगुल घ्यू में और ख्वर भद्याइ में वा्ल डिपाट भय।

हरित – अरे यार रमेश ! यं त यार अन्हावैकि चोट कन्हा्व मारणीं वा्ल भा्य। लागि गयौ छक्क नतर मुक्क खांणक हिसाब भय। पर अच्यान नेतागिरी लै कि भरौसक काम जै कि रैगो। समाजैकि भलाइ करणीं नैताओं दगै पार्टी वालों कैं के मल्लब न रून ओर जन्ता लै उनूकें चुत्ती जस समझैं। असल में अच्यान जन्ता कैं लै नेता नें अभिनेता चैनीं, जो बखत पर डाड़ हालि दिओ और बखत पारि गोलि हांड़ि दिओ और फिर पार्टीनक लै के भरौस न रै गोय आ्ब। जो पार्टि भलि बात करें, उ चुनावै न जिति सकनि। फिर जितंणा्क बाद नेताओंकि बजार ला्गि जैं। राजनीति लै पैलियैकि चार दल्द जैसि सिद्धांतों वालि सखत जै कि रैगे आ्ब....

सुरेश – तुमूकें लै भल अन्ताज छु हो हरीश....नैं नैं हरित चंद्र ज्यू राजनीतिक ! मैं लै खाली तुमरी भैं आपंण डिप्लोमाक भरौस रूनी ज्यादे है ज्यादे ईई, एसई बंणि रूनीं। आज ठुल–ठुल इंजीनियर, डाक्टर कि आईएएस, आईपीएस लै हात बांदि बेर ठा़ड़ रूनीं कांमनै म्या्र सामंणि। य सब राजनीतिक कमाल और जन्ताकि कि भगवानैकि किर्प छु यार। लालबत्ति मिलि रै। **(मणीं रुकि बेर)** जन्ता कि हैं यार, मौनूंकि भैं हुं। राजनीति रांणि जि चैं सि करै सकैं उ हैं। उकें मूरख बड़ूंण ऊंण चैं बस। एक बारि भोट में जितै दियौ बस, कि फरक पड़ूं को् दल में छां। झपैक मारणा्क काम भा्य। दल बदलुन कैं अच्यान इज्जत लै औरन है बांकि मिलैं, दगड़ै है जां

सात पुस्तनौक इंतजाम। और यार फिर पांच सात भौत हुनीं जन्ता कैं भरमूंणाक तैं। वीकि याददास्त उसी लै भौतै कम हैं, उ सब थै लिहं, सब सै लिहं और फिर पिनाऊ पाताक चारि सब भुलि जैं।

दीपक – य भलि कै यार तुमूंलि लै। हमा्र यां त अगर सरकार य नियम बणै दियो कि रोज रात्ति ब्याव हर आदिम कैं द्वि–द्वि डंड खांण पड़ाल, त जांणछा कि ह्वल.....?

ललित – कि ह्वल ?

दीपक – अरे मूरखा, तु आपंण डिमाग त कब्बै लगूनैं न्हैतै। कि पुर डिमाग बिन खर्चिये वापिस भगवान कैं लौटूंणक इरा्द छु त्यरै ? कि ह्वल, द्वि–चार दिन जन्ता हल्ल–गुल्ल करैलि, धरना–प्रदर्शन, अनशन, बजार–प्रदेश–देश लै बंद करै सकें। पर ढील–ढीलै चुप है जालि। डंड खांण हुं तैय्यार है जालि। कौलि–पड़ोसि लै खांणौ, कि फरक पड़ूं मैं लै खै ल्यूंल त। फिर बांणि पड़ि जालि, आपंण काम–धंध में लागि जालि। बांकि ह्वलौ, डंड मारंण–खांण में लै बीच में ठेक्दारी, कमीशनबाजि हुंणि लागलि। सब का्व पेटा्क ता्व भा्य यार। खैर...रमेश, तु सुंणा आपंणि का्थ, बता कि करनौछै ?

रमेश – बका्र चरूणयूं।

सुरेश – कि कुनौछै ? त सूट–बूट पैरि बेर बका्र चरूनौछै ?

हरित – यार रमेश, किलै झुटि बलांछै, सुंणा यार आपंणि का्थ।

रमेश – कि सुणूं यार, कालेज बै निकइ बेर एक भौत ठुलि मल्टी नेशनल कंपनी में लाग्यूं। पर वांक रंग–ढंग म्या्र समझ में न आ्य। खून चुसनीं सा्ल मैसूंक। जो जतू सकर खून चुसूं वीकि उतू ठुलि कंपनी। फिर नेताज्यू **(सुरेशा्क उज्यांणि शान करि बेर)** तुमरि त निगुरि राजनीति **(रुकि बेर),** राजनीति नै अराजनीति लै हर जा्ग पांजी रैं। म्येरि तैक दगै ला्गनेर नि भै। छोड़ि आयूं मैं। सोचौ–आपंणै इला्क में जै बेर के करूंल, आपंणै घर छजूंल।

ललित – फिर कैं सरकारि नौकरि करि हुनैलि.....

हरित – सरकारि नौकरि त तीर्थ करंण जसि हुनेर भइ। को न करंण चान। पर मौक कतुकन कैं मिलूं। पैली त सरकारि पदै गिणणीं लैका्क हुनेर भा्य, फिरि उनूमें बै कतुकप भितर–भितरै नेताज्यूक **(सुरेशा्क उज्यांणि शान करि बेर)** भा्इ–भतिजौंलै भरि जनेर भा्य। फिर मणीं बची–खुची अखबारन तक पुजि लै गया बिरुजगार बानरौंकि बांट में आरक्षणौक बिराउ लै कि भैटि रुनेर भय।

रमेश – ततुकै हुन, के बात न हुनि। नौकरी तैं फौरम भरण लै सबूंक बसैकि बात जै कि भै। पैली फौर्म खरीदंण हुं डबल चैनीं, एडवरटैज वा्ल अखबार है खरीदणै पड़ूं। चार–छै फोटू बणूंण पड़नी। फिर द्वि–चार सौ रुपैंक डान भरंण पड़ूं बिरुजगार हुंणा्क जुरम में ड्राफ्टैकि शकल में। सरकारि औफीसरना्क खुटी सिलाम अलग करंण पड़नीं, सर्टिफिकेट–फोटू अटेस्ट करूंण हुं। रजिस्ट्री करंण हुं अलग लैन लगूंण पड़ें, जांणि लैनैल नौकरी बानींण लागि रै हुनैलि। दाज्यू एक फौरम भरंण में ड्राफ्ट है अलग कम है कम सौ रुपैं मांथिक ठंड है जा्नीं।

दीपक – और डबलौंक तुमूं तें हमेशा ट्वाटै भय, फिरि कि भौ अधिल ?

रमेश – होइ यार, ठीक कुंणाछा। बौज्यूल कसिकै बका्र चरै–बेचि बेर पढ़ाई भय मकैं। पैली–पैली नौकरीक फौरम भरंण हुं मै डबल मांगि'ई ल्हिछी और बौज्यू दि लै दिछी। पर पछां–पछां मकैं लै शरम ऊंण लागी और ढील–ढीलै हम द्वियै बा्ब च्या्ल मागंण–दिंण में शरमांण लाग्यां।

हरित – सई कुंणौछै यार ! गरीब मैसोंक त औतरंण बा्ट लै न रै गो्य आ्ब, डुनै हुं गाड़ डुनै हुं भ्योव हुनीं–हमूंल सुंणी भै त्वील भो्गी भै। खैर बता, फिरि कि करौ त्वील ? कैं भौछै जुगाड़ ?

रमेश – जुगाड़ैकि भलि कै यार तुमुंल लै। एक नेता मिलि पड़ौ ए दिन, बजार में भाषण दिंणौछी–हमूं कें सरकारि नौकरीक भरौस छ्वेड़ि आपंण रुजगार करंण चैं.....बैंक इफरात में

लोन दिणईं। मैंल लै सोचौ–के आपंणै काम करी जाओ, न्यार रूंल–आपंणि नींन सितुंल, आंपणि भूख खूंल।

ललित *– फिर ?*

रमेश *– लगाईं उद्योग केंद्रोंक चक्कर। पैली त वांक बाबू के बतूंण हुं मनसाऐ नैं, फिर वील व्यवसाय लगूंण हुं फौरमाक तें एक व्यवसायिक केंद्रोक पत्त बतै बेर आपंण पल्ल झाड़ौ।*

हरित *– कि बात कै यार तुमूंल लै। **(दार्शनिक भावैल)** व्यवसाय लगूंणौक फौरम ब्यवसायिक केंद्र पारि....भलि तुकबंदी है जांणै यार, कविता बंणि जांणै। पर, हद्द भै यार, एक–द्वि रुपैंक फौरम न धरणीं कि लग्वाल व्यवसाय ?*

रमेश *– खैर फौरम ल्हि बेर कसिकै भरौ। उमै लै यसि–यसि चीज–जानकारि मांगी भाय कि भरते–भरते बाब से याद ऐ जाऔ। निगुर व्यवसाय लगूंणी जागैकि रजिस्ट्री मांगणाय। आंपणै बुबुकि जमीनौक किरायनाम बणूंण पड़ौ तहसील बै मांथि–मुंणिकि फीस दिबेर। तीस हजार सालाना है कम आयक प्रमाण–पत्रा लै बणंवा कसिकै और फौरम जमा करवा।*

हरित *– फिरि लागि लै कि गोय हुनल पै तुमर पक्क व्यवसाय।*

रमेश *– **(हंसन–हंसनै)** अरे नैं यार, बेअकलाक बिल्कुल आंखिर में उ बैंकक नौ पुछंण लागीं जो लोन दयल, म्येरि गारंटी ल्यल। लाग्यूं फिर यास बैंकोंक सुदयाव पर क्वे रनकर मनसाऐ नैं।*

ललित *– हाय, किलै ?*

रमेश *– अरे उं डबलौंक ब्यौपारि भाय। उनूं कें गारंटी चैनेर भइ। एफडी–जमीन–जैदाद चैनेर भाय, गिर्बी धरंण हुं। गैरेंटर चैनेर भाय द्वि–द्वि म्वाट आसामि। कां बै करछीं मैं इतुक जुगाड़ ?*

हरित *– भौतै अजीब नियम–कानून छन सालौंक। एक तरफ त परिवारैकि कमै तीस हजार रुपैं है कम मांगनी सालाना, दुहरि तरफ द्वि–द्वि लाखैकि गारंटी मांगनीं एक लाखाक लोन में। जैक कमै सई में तीस हजार है कम ह्वेलि, वीक पास कां बै ह्वेलि ततू हैसियत ?*

रमेश *– यैं गल्ति करि भैट्यूं मैं लै। झुठि न बुलै सक्यूं। मैंल सांचि–सांचि कै दे म्यर आज प्रमाण पत्रा असल छू। फिर किलै दिंछी उं मकैं लोन ?*

दीपक *– जांणि–बुझि बेर झुठि बलाओ कूं कानून। यास में सच्च गरीब आदिम जै कि ल्हि सकूं सरकारि लोन। **(मलि कै द्वियै हात करूं)** भगवान परमेश्वरौ ! लक्ष्मी और सरस्वतीक तुमूंल कब्बै मेलै न कराय। यास नियम बणंणी कुअकलियों कें मणीं अकल दिया ईश्वरो !*

हरित *– त तुमर य स्वींण लै स्वींणै रै गोय हुनल, पै ?*

रमेश *– पै कि, क्ये नैं, वापिस घर ऐ गोयूं, बाबुक दगाड़ बकार चरूंण लाग्यूं।*

(होटलक कर्मचारि ट्रे में चहा और बिस्कुट लै गो, सब चहा पिंण लागि जानीं)

सुरेश *– पै कि तब बटी बकारै चरूंणौछै, पै त्येरि शकल त क्याप औरै कूंणै।*

रमेश *– घर ऐ बेर बकार चरूंण लाग्यूं। भलि जाति–खानिक हाइब्रिड नस्लाक बकार मोल्यै ल्यायूं। मणीं भलि नस्लैकि भेड़ लै पालीं, उनूंमें भलि बढ़त छी। उनर ऊन लै भल किस्मक छी। बाबु कैं भल अन्ताज भय य कामौक। उनूंल बड़ि मदद करी म्येरि। घराक और झंणिनाक तैं लै य सितिल काम भय, उनैरि मिहनत और म्येरि नई तकनीक रंग लै। भलि तरक्की मिली मकें। चारै साल में फौज बै बाकरोंकि सप्लाइक ठ्यौक मिलि गोय। ऊन पैली मैं नजिकाक बजार में बेचछीं, पर मणीं–मणीं कै भ्यार लै भेजंण शुरू करौ। ढील–ढीलै म्यार भेड़ोंक भलि क्वालिटीक ऊनैकि बड़ि चौल है ग्येइ। ऊनैकि सफाइ, कातंण और कालीन बणूंण हुं फैक्ट्री खोलणैकि सोचंण लाग्यूं। पत्त नैं कसिक बैंक वालों कैं हाव लागि पड़ी। कएक सरकारि–पिराइवेट बैंक वालोंल म्यार औफिस उज्यांणि दौड़ लगै दे। कूंण लागीं–लोन चैन पड़ल बताया, क्वे फारमैलिटीकि चिंता झन करिया। हम सब आफ्फी करि ल्यूंल। त य छी मितुरो म्येरि जीत, जो बैंक वाल पांच साल पैली मकैं मूंख न लगूंणाछी, आज आपंण खुटां हिटि बेर म्येरि देइ में ऐ राछी।*

सुरेश *– जैल थै वील पै, ठीक कई जैरौ यार, भौत थांण पड़ौ तुकैं लै, पर खानदानि घराक रुजगार में आंखिर भलि तरक्की मिली तुकैं, तुकैं बधाइ। त्येरि फैक्ट्री खूब चलौ, हम य चानूं।*

दीपक *– त्वील आपंणि मिहनतैल आपंणै नैं, आपंण मै–बाबुक दगा्ड़ हमैरि लै मुनइ उच्चि करि हाली। तु आजैकि हर तरफ फैली बेरुजगारिकि अमूंसि जैसि का्इ अन्यारि रात में शुकुर ता्र जस चमकणौछै, तुकैं बधा्इ।*

सब *– हमैरि लै बधा्इ।*

(सब ठा्ड़ है बेर ता्इ बजूंण लागनीं, पर्द गिरूं)